डॉ.पद्मा पाटील
एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि, **घाडगे कांचन कृष्णा** द्वारा लिखित,

"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना"

('भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' के परिप्रेक्ष्य में)

लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

27/01/2009

(डॉ.पद्मा पाटील)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 27/01/2009

डॉ. सौ. भारती विजयराव शेळके
एम्.ए.,एम.फिल., पीएच्.डी.,डी.एच.ई.
अधिव्याख्याती (वरिष्ठ) श्रेणी हिंदी विभाग,
कमला महाविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, **घाडगे कांचन कृष्णा** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए **"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना"** (**'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' के परिप्रेक्ष्य में)** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 27/01/2009

शोध-निर्देशिका

B Shelke

(डॉ. सौ. भारती विजयराव शेळके)

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि, **"भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना"** **('भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' के परिप्रेक्ष्य में)** लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 27/01/2009

शोध-छात्रा

Ghadge.k.k

(कांचन कृष्णा घाडगे)

समर्पण

प्रेरणा तथा उत्साह के स्त्रोत
आदरणीय माता-पिता एवं
गुरूपर्य इनके प्रति सादर
समर्पित...

प्राक्कथन

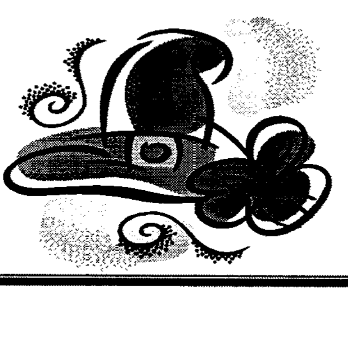

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन -

एम.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात मेरे मन में शोध कार्य करने की एक मात्र उत्कट इच्छा थी। 'नाटक' शुरू से मेरे अध्ययन और रूचि का विषय रहा है। सभी नाटककारों के नाटकों में से भारतेन्दु हरिचन्द्र के नाटकों से मुझे ज्यादा लगाव रहा। उनके नाटकों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की क्षमता मुझे अनुभव हुई। अत: मैंने उनके नाटकों को पढ़ना आरंभ किया तो मुझे स्वातंत्र्यपूर्व काल में लिखे गये 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों में विशेषरूप से राष्ट्रीयता की भावना प्रखरता से परंतु व्यंग्यात्मक रूप में प्रकट की हुई दिखाई दी। स्वंतत्रता आंदोलन के समय लिखे गये ये नाटक आज भी हिन्दी नाट्य साहित्य में सभी दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। लेकिन आश्चर्य की बात है कि भारतेन्दु जी के इन नाटकों पर विशेष रूप से शोध कार्य नहीं हुआ। जब मुझे एम.फिल के लघुशोध-प्रबंध के विषय चयन का अवसर प्राप्त हुआ तब मैंने तुरन्त इन नाटकों को अपने विशेष अध्ययन का केन्द्र बनाया। इस विषय के संदर्भ में मैंने मार्गदर्शिका गुरूवर्या डॉ.भारती शेळके जी से चर्चा की और उन्होंने स्वीकृति दे दी। तब मेरा उत्साह द्विगुणित हुआ और मैंने शोध कार्य आरम्भ किया।

शोध विषय का उद्देश्य -

साहित्य का कोई भी रूप चाहे वह कहानी, उपन्यास, नाटक या काव्य हो वह निरूद्देश्य नहीं होता। उसके निर्माण के मूल में कोई-ना-कोई यथार्थ उद्देश्य छिपा रहता हैं। साहित्य के सृजन का भारतेन्दु का मुख्य उद्देश्य किसी शाश्वत नियम को ढूँढ़ निकालना नहीं था, बल्कि नाटकों के माध्यम से समाज में नवजागरण की चेतना निर्माण करना था। जिससे जनता अपनी परतंत्रता एवं दासता से देश की हीन दशा को पहचाने और उन्नति के लिए प्रयत्न करे। वे जनवादी थे। समय के साथ नाटक रचना के नियमों

में भी परिवर्तन आता गया। धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिष्टाचार, पुरोहितों, मौलवियों के अधिकारों का खंडन कर समाज में स्वदेशी के साथ धार्मिक सहिष्णुता और हिन्दु-मुस्लिम एकता का सूत्र अपनाया गया। जिससे भारत में राष्ट्रीय चेतना की नींव डाली गयी और उस नींव पर ही हमारी संस्कृति का निर्माण हो रहा है। लोकसंस्कृति तथा राष्ट्रीय भावनाओं से अनुप्राणित भारतेन्दु कालीन साहित्य जनता के लिए चेतना और प्रगति का अपूर्व सन्देश है।

शोध विषय का महत्व -

भारतीय इतिहास में उन्नीसवीं सदी प्रत्येक दृष्टिकोन से महान हलचल तथा उथल-पुथल की रही हैं। इस सदी में साहित्यिक क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन हुए। जिसमें भारतेन्दु के साहित्य ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आधुनिक युग में 'साहित्य' केवल मनोरंजन की वस्तु न रहकर जनसाधारण की मानसिकता में परिवर्तन लानेवाला युगांतकारी रहा है। विशेषकर भारतेंन्दु के नाटकों ने नित्य के जीवन और समसामयिक घटनाओं से निकटतम सम्बन्ध स्थापित किया था। उस समय लिखे गये नाटकों में सर्व प्रथम स्पष्ट एवं व्यापक रूप से धार्मिकता, सामाजिकता, आर्थिकता, यथार्थता, स्वच्छन्दता इनके तत्व एवं बुद्धिवाद का समावेश हुआ। वास्तव में इन नाटकों के माध्यम से भारतेन्दु ने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्याप्त अन्याय, स्वार्थांधता, अधर्म पर विनोदपूर्ण ढ़ंग से प्रहार किया है, जो पाठकों के मन पर सीधा प्रभाव ड़ालकर उन्हें अपनी आस-पास की इन विषम परिस्थितियों पर सोचने के लिए मजबूर कर देता हैं।

मेरी जानकारी के अनुसार "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना" इस विषय को लेकर किसी भी शोधकर्तानि अनुसंधान नहीं किया। अत: मैंने इस विषय पर अनुसंधान प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में किया है।

शोध कार्य के दौरान उभरे प्रश्न -

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' इन विवेचित नाटकों के अनुसंधान कार्य के आरंभ में मेरे मन में निम्नाकित प्रश्न उपस्थित हुए थे वे निम्नलिखित है -

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विवेच्य नाटकों का मूल उद्‌देश्य क्या है?
2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विवेच्य नाटकों की विशेषताएँ क्या है?
3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विवेच्य नाटकों में मौलिकता तथा मूलतत्व क्या है?
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विवेच्य नाटकों में राजनीतिक संघर्ष का चित्रण किस प्रकार हुआ है?
5. भारतेन्दु हरिचन्द्र के विवच्य नाटकों में धार्मिक पाखंडता का वर्णन किस प्रकार किया गया है?
6. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र विवेच्य नाटकों में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक परिस्थितियों का चित्रण करने में सार्थक सिद्‌ध हुए है क्या?
7. पराधीनता के समय भारतेन्दु के विवेच्य नाटक राष्ट्रीय नवजागरण चेतना फैलाने मैं सफल हुए है क्या?

उपर्युक्त प्रश्नों का अनुसंधानात्मक अध्ययन करते हुए उनसे प्राप्त निष्कर्ष प्रत उत्तर मैंने उपलब्धि में दर्ज किए हैं।

शोध विषय की व्याप्ति -

शोध विषय के अनुसंधान के लिए लघु-शोध प्रबंध की सीमा निश्चित होनी आवश्यक होती है। इसलिए मैंने प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया हैं। प्रस्तुत विषय का अध्ययन सूक्ष्म और योजना बद्‌ध संपन्न होने के लिए मैंने प्रयास किया है। उनको निम्न अध्यायों में विभाजित किया है -

❖ प्रथम अध्याय : 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। उनके व्यक्तित्व की जानकारी के अंतर्गत जन्मतिथि, जन्मस्थान, माता, पिता, बचपन, परिवार, शिक्षा, विवाह, संतान, देशभक्त हरिश्चन्द्र, सहृदयता, स्वाभिमानी, क्रांतिकारी उद्बोधनकारी व्यक्तित्व, अन्याय व अत्याचार के प्रति विद्रोह, संघर्षशील एवं जुझारू व्यक्तित्व, मृत्यु आदि का परिचय दिया है। उनके कृतित्व के अंतर्गत उनके संम्पूर्ण रचना संसार जिसमें कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आलोचनाएँ, काव्यसंग्रह, पत्र-पत्रिकाएँ निबंध, ऐतिहासिक रचनाएँ, धार्मिक रचनाएँ, प्रहसनात्मक रचनाएँ आदि का वर्णन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं।

❖ दवितिय अध्याय - 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों का कथ्य

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपर्युक्त दोनों नाटकों का कथ्य दिया गया, जिसमें राष्ट्रहित की भावना की अभिव्यक्ति की हैं और बाद में विस्तार के साथ दोनों नाटकों का कथानक दिया है। नाटकों के कथ्य का मुख्य विषय 'राजनैतिक समस्या' है। समाज तथा राष्ट्र की दुर्दिन परिस्थितियों को सुधारने के लिए भारतेन्दु ने उपर्युक्त विवेच्य नाटकों का निर्माण किया था। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए गए हैं और साथ ही दोनों नाटकों के कथानक समन्वित निष्कर्ष दिया गया है।

❖ तृतीय अध्याय - 'राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश और विवेच्य नाटक'

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश विस्तार के साथ विश्लेषित किया है। इसमें सबसे पहले राष्ट्रीय नवजागरण का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट किया है। उसके बाद 'भारत-दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' इन दो नाटकों में वर्णित राष्ट्रीय नवजागरण परिवेश को विस्तार के साथ विश्लेषित गया है। जो तत्कालीन विषम परिस्थितियों में देश की अंग्रेजों दवारा जो दुर्दशा हुई थी उसे बड़े ही

सजीवता से स्पष्ट किया गया है। फिर इन दो विवेच्य नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अध्याय के अंत में समन्वित निष्कर्ष दिया है।

❖ चतुर्थ अध्याय - "विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण चेतना"

प्रस्तुत अध्याय में 'भारत-दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों में विवेचित राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना को प्रस्तुत किया है। सबसे पहले राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप स्पष्ट किया गया है। फिर 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटक में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय चेतना का तुलनात्मक विमर्श दिया गया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

❖ पंचम अध्याय - "राष्ट्रीय नवजागरण चेतना में भारतेन्दु का योगदान"

प्रस्तुत अध्याय में भारतेन्दु जी ने राष्ट्रीय नवजागरण चेतना पूरे देश में फैलाने के लिए किसप्रकार महत्वपूर्ण योगदान दिया है इसे स्पष्ट किया है। उनके इसी महान कार्य को इस अध्याय में विविध पहलूओं से स्पष्ट किया है। जो देश व्यापी राष्ट्रीय नवजागरण चेतना के निर्माण में नींव ड़ालने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े भारत को स्वतंत्र करने के लिए देश की जनता में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना निर्माण करनें में उनका योगदान कितना प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय है इसे प्रस्तुत अध्याय में बताया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया हैं।

❖ उपसंहार -

अंत मे 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के उपलब्ध तथ्यों को आधार मानकर निकाले गए निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। तद्उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

❖ शोध कार्य की मौलिकता -

1. "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना" ('भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' के परिप्रेक्ष्य में) इस विषय पर आज तक किसी भी शोधकर्ता ने अनुसंधान कार्य नहीं किया है। यह लघु शोध प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की

दृष्टि से विशेष महत्व रखता हैं।

2. भारतेन्दुजी के प्रस्तुत नाटकों के कथ्य में देशभक्ति, अतीत का गौरवगान, वर्तमान के प्रति क्षोभ आदि को दर्शाया गया हैं।

3. विवेच्य नाटकों में समाज में व्याप्त कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों, तत्कालीन समाज में फैली हुई गरीबी, भ्रष्ट प्रशासनजन्य असंतोष तथा जनहताशा को अभिव्यक्ति मिली हैं।

4. भारतेन्दु काल में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर का ढ़ाँचा बिल्कुल ध्वस्त हो चुका था, उन परिस्थितियों को प्रस्तुत नाटकों में वर्णित किया गया है।

5. 'अंग्रेजोने फूट डालो और शासन करो' की कुटील नीति को अपना कर देश की संस्कृति, सभ्यता और वैभव को लूटकर सभी ओर किस प्रकार अनाचार, व्यभिचार, अनैतिकता को फैलाया था। इस सत्य के विशद किया गया है।

6. समाज के लोंगों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता निर्माण करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है।

7. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में तत्कालीन समाज में स्थित मानव जीवन की हर पीड़ा, दर्द, निष्क्रियता, उदासीनता, देश प्रेम की कमी आदि स्थितियों को समस्या को स्पष्ट किया है।

ऋणनिर्देश

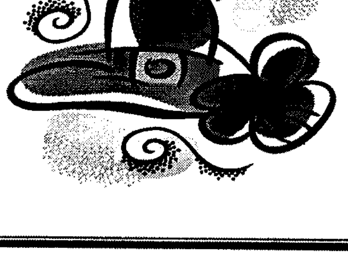

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय आदरणीय गुरूवर्या शोध-निर्देशिका, डॉ.भारती विजयराव शेळके, हिंदी विभाग कमला, महाविद्यालय, कोल्हापुर के कुशल निर्देशन का फल है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मार्गदर्शक के रूप में आपने आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। जिससे मैं आपके साहित्यिक शोध दृष्टि के मौलिक विचारों से लाभान्वित हुई हूँ। आपकी प्रेरणा, उदारता, प्रोत्साहन से ही मैंने अपना शोध कार्य संपन्न किया है। जिसमें आपका बहुमूल्य योगदान मिला हुआ हैं।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के छात्र, प्रिय अध्यापक आदरणीय डॉ.पद्मा पाटील जी, प्रा.डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, शोभा निंबाळकर जी, आदि गुरूवर्यो का सहयोग मिला। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे लिए कठिन परिश्रम करनेवाले मेरे आदरणीय पिता कृष्णा घाडगे और स्नेहमयी माता निलावती घाडगे और बड़े भाई-बहन, सभी जिजाजी आदि के ऋण शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकतीं। अत: मेरे सहयोगी मित्रों का भी मैं विशेष आभारी हूँ। जिन्होंने लघु शोध प्रबंध के कार्य को संपन्न करने में समय समय पर सहयोग दिया है। इन सबकी मैं विशेष आभारी हूँ।

साथ ही जीन ज्ञात-अज्ञातों की शुभ कामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं उन सभी के प्रति मैं आभारी हूँ। भविष्य में इन सभी लोगों से सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सम्मुख परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 27/01/2009

शोध-छात्रा

(सुश्री . घाडगे कांचन कृष्णा)

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन ____________________ i - vi

ऋणनिर्देश ____________________ vii

अनुक्रमणिका ____________________ ix - xiv

प्रथम अध्याय : 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' व्यक्तित्व एवं कृतित्व

.... 1 ते 12

प्रस्तावना

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्मतिथि

1.1.2 जन्मस्थान

1.1.3 माता-पिता

1.1.4 बचपन

1.1.5 परिवार

1.1.6 शिक्षा

1.1.7 विवाह

1.1.8 संतान

1.1.9 देशभक्त हरिश्चन्द्र

1.1.10 सहृदयता

1.1.11 स्वाभिमानी

1.1.12 क्रांतिकारी

1.1.13 उद्बोनधनकारी व्यक्तित्व

1.1.14 अन्याय व अत्याचार के प्रति विद्रोह

1.1.15 संघर्षशील एवं जुझारू व्यक्तित्व

1.1.16 मृत्यु

1.2 कृतित्व

1.2.1 कहानीकार

1.2.2 उपन्यासकार हरिश्चन्द्र

1.2.3 नाटककार हरिश्चंद्र

1.2.4 एकांकी

1.2.5 आलोचनाएँ

1.2.6 यात्राएँ

1.2.7 काव्यसंग्रह

1.2.8 पत्र-पत्रिकाएँ

1.2.9 निबंधकार हरिश्चन्द्र

1.2.10 ऐतिहासिक रचनाएँ

1.2.11 धार्मिक रचनाएँ

1.2.12 प्रहसनात्मक रचनाएँ

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों का कथ्य .... **13 ते 58**

2.1 कथावस्तु

2.1.1 'भारत - दुर्दशा' नाटक का कथ्य

प्रस्तावना

निष्कर्ष

2.1.2 'अंधेरनगरी' नाटक का कथ्य

प्रस्तावना

निष्कर्ष

2.2 वस्तुविधान

2.2.1 पात्र

सैद्धांतिक विवेचन

2.2.2 'भारत-दुर्दशा' नाटक में चित्रित पात्र

2.2.2.1 **प्रमुख पात्र**

भारत दुर्दैव

भारत

भारत भाग्य

एक योगी

2.2.2.2 **प्रतीक पात्र**

सत्यानाश फौजदार

रोग

आलस

मदिरा

अंधकार

निर्लज्जता

2.2.2.3 **वर्ग पात्र**

पहला देशी

दूसरा देशी

कवि

एडिटर

डिसलायल्टी

बंगाली

महाराष्ट्री

2.2.3 'अंधेरनगरी' नाटक में चित्रित पात्र

2.2.3.1 प्रमुख पात्र

राजा

महंत

गोबरधनदास और नारायणदास

2.2.3.2 गौण पात्र

कबाबवाला

चनेवाला

नारंगीवाला

हलवाई

कुँजड़िन

मुगल

पाचकवाला

मछलीवाली

जातवाला (ब्राह्मण)

बनियाँ

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : 'राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश और विवेच्य नाटक' .... 59 ते 96

प्रस्तावना

3.1 राष्ट्रीय नवजागरण - अर्थ एवं स्वरूप

3.1.1 नवजागरण का अर्थ

3.1.2 राष्ट्रीय नवजागरण स्वरूप

3.2 'भारत - दुर्दशा' नाटक में वर्णित राष्ट्रीय नवजागरण का परिवेश

प्रस्तावना

3.2.1 सामाजिक परिवेश

3.2.2 धार्मिक परिवेश

3.2.3 राजनीतिक परिवेश

3.2.4 आर्थिक परिवेश

3.2.5 सांस्कृतिक परिवेश

3.2.6 शैक्षणिक परिवेश

निष्कर्ष

3.3 'अंधेरनगरी' नाटक में वर्णित नवजागरण परिवेश

प्रस्तावना

3.3.1 सामाजिक परिवेश

3.3.2 धार्मिक परिवेश

3.3.3 राजनीतिक परिवेश

3.3.4 सांस्कृतिक परिवेश

निष्कर्ष

3.4 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटक में वर्णित राष्ट्रीय नवजागरण परिवेश का तुलनात्मक विमर्श

3.4.1 सामाजिक परिवेश

3.4.2 धार्मिक परिवेश

3.4.3 राजनीतिक परिवेश

3.4.4 सांस्कृतिक परिवेश

समानता

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय नवजागरण चेतना .... 97 ते 126

4.1 राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप

4.1.1 चेतना का अर्थ

4.1.2 राष्ट्रीय चेतना का तात्पर्य

4.1.3 राजनीतिक चेतना और राष्ट्रीयता

4.1.4 सामाजिक चेतना और राष्ट्रीयता

4.1.5 आर्थिक चेतना और राष्ट्रीयता

4.1.6 धार्मिक चेतना और राष्ट्रीयता

4.2 'भारत दुर्दशा' नाटक में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय चेतना

4.3 'अंधेरनगरी' नाटक में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय नवजागरण चेतना

4.4 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेरनगरी' नाटकों में राष्ट्रीय चेतना का तुलनात्मक विमर्श

समन्वित निष्कर्ष

पंचम अध्याय : "राष्ट्रीय नवजागरण चेतना में भारतेन्दु का योगदान" .... 127 ते 132

प्रस्तावना

निष्कर्ष

उपसंहार .... 133 ते 142

संदर्भ ग्रंथ सूची .... 143 ते 146